एक लाख से ज्यादा लोगों को रौशनी दे चुके हैं डॉ. भ्रमरेश

आपका नजरिया ही आपके जीवन के लक्ष्य और उसमें मिली सफलता को निर्धारित करता है। डॉ. भ्रमरेश के लिए जीवन हर दिन, हर पल कुछ नया सीखने का नाम है। जीवन भर ज्ञान प्राप्त करने की इस लालसा का लक्ष्य मानव कल्याण है। अपने कार्य में निपुण डॉ. भ्रमरेश शर्मा सर्वजन हिताय की इस महान सोच की वजह से जीवन में लगातार सफलता की सीढ़ियां चढ़ते जा रहे हैं।

मरीजों का नेत्र परीक्षण करते हुए डॉ. भ्रमरेश शर्मा

डॉ. भ्रमरेश शर्मा

यह फरवरी 1962 की तीन तारीख थी, जब डॉ. गोपीचन्द शर्मा और चंदवती शर्मा को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। बेटे का नाम रखा गया भ्रमरेश चन्द्र शर्मा। पिता डॉ. गोपीचन्द, डिग्री कॉलेज पीलीभीत में हिन्दी के प्रोफेसर थे, तो मां कुशल गृहिणी। भ्रमरेश की स्कूली शिक्षा पीलीभीत में ही हुई। उन्होंने 1976 में हाईस्कूल और 1978 में इंटर की परीक्षा पास की। यह वह समय था, जब बरेली में रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए आंदोलन चल रहा था, जिससे विश्वविद्यालय का 1978 से 1979 का सत्र खराब हो गया था। इस वजह से वे बरेली कॉलेज में प्रवेश नहीं ले पाये। अगले सेशन में उन्होंने बरेली कॉलेज के बीएससी कोर्स में प्रवेश लिया और उसके ठीक बाद एसएन मेडिकल कॉलेज आगरा में उनका सिलेक्शन हो गया।

हिन्दुस्तान

साल 1980 में भ्रमरेश आगरा आ गए। एसएन कॉलेज से एमबीबीएस करने के बाद वहीं एमएस में प्रवेश लिया। अभी उनका एमएस का रिजल्ट भी नहीं आया था, जब आगरा के मशहूर सुंदरानी अस्पताल के डॉ. जेएम पाहवा ने उनसे प्रैक्टिस शुरू करने का आग्रह किया। डॉ. भ्रमरेश ने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। साल 1993 तक वे आगरा के सुंदरानी अस्पताल में ही प्रैक्टिस करते रहे। इस दौरान उन्होंने नेत्र रोगियों के लिए जमकर कैंप लगाये।

1993 में मिला जीवन संगिनी का साथ

वर्ष 1993 में डॉ. भ्रमरेश के जीवन में उनकी जीवन संगिनी ने प्रवेश किया। हाथरस की रीना शर्मा के साथ उनका विवाह हो गया। उनके ससुर डॉ. ओम शर्मा का नाम हाथरस के मशहूर डॉक्टरों में शुमार रहा है। हरि आई. हास्पिटल हाथरस उनका आंखों का मशहूर अस्पताल है। डॉ. भ्रमरेश ने इस अस्पताल में 1993 से 1995 के बीच अपनी सेवाएं दी।

1995 में बरेली में शुरू की प्रैक्टिस

1995 के अंत में डॉ. भ्रमरेश बरेली आ गये। बरेली में उनके बीएससी के समय के कई सीनियर और जूनियर साथी थे। इनमें डॉ. प्रकाश दूबे, डॉ. योगेन्द्र कुमार, डॉ. वीके खेतान, डॉ. अनिल पराशर आदि प्रमुख हैं। डॉ. सुदीप सरन उनसे एक वर्ष सीनियर हैं। बरेली आने के बाद उन्होंने केशलता अस्पताल में अपनी सेवाएं देनी शुरू की। केशलता में 4 महीने तक काम करने के बाद वे सुनयन नेत्र अस्पताल से जुड़ गए।

रोगियों के प्रति समर्पण से कमाया नाम

सुनयन अस्पताल से ही डॉ. भ्रमरेश को अपने विनम्र व्यवहार और रोगियों के प्रति समर्पण भाव के कारण जबरदस्त लोकप्रियता मिली। इस दौरान उनके चैरिटेबल शिविरों ने उन्हें जनता के बीच काफी लोकप्रिय बना दिया। डॉ. भ्रमरेश बताते हैं कि उस दौरान वे एक वर्ष में लगभग 6000 तक ऑपरेशन करते थे। तमाम सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से उन्होंने बरेली ही नहीं, बल्कि उत्तराखंड में भी खूब कैंप लगाए। आर्यसमाज नैनीताल के साथ मिलकर उन्होंने उत्तराखंड के लोहाघाट, डीडीहाट और धारचूला में कैंप लगाए। उस समय उत्तराखंड में चिकित्सा सुविधाएं बेहतर नहीं थी। ऐसे में डॉ. भ्रमरेश को लोग हाथों-हाथ लेते थे। साल 2014 तक यह सिलसिला अनवरत चलता रहा। वे अभी तक एक हजार से ज्यादा कैंप लगा चुके हैं। मई-जून में एनएचपीसी के साथ फिर से उत्तराखंड में कैंप लगाने जा रहे हैं।

2014 में शुरू हुआ पारिजात अस्पताल

साल 2014 में डॉ. भ्रमरेश ने अपने बड़े बेटे पारिजात के नाम पर प्रेमनगर में पारिजात चैरिटेबल आई हॉस्पिटल की स्थापना की। तब से वह इसी अस्पताल के माध्यम से लोगों की सेवा कर रहे हैं। उनके बड़े बेटे पारिजात इस समय एमबीबीएस फाइनल ईयर के छात्र हैं। वहीं छोटा बेटा लक्ष्य शर्मा एमबीबीएस सेकेण्ड ईयर का छात्र है। डॉ. भ्रमरेश अपनी चिकित्सीय सेवाओं के साथ मानवीय मूल्यों के लिए भी जाने जाते हैं। वे कहते हैं कि जीवन सिर्फ सीखने का नाम है। हम लोग रोजाना कुछ ना कुछ सीखते हैं और मरीजों को बेहतर इलाज देने के लिए इनका प्रयोग करते हैं। एक वक्त था, जब ऑपरेशन के दौरान 4-6 टांके लगाए जाते थे। धीरे-धीरे एस.आई.सी.एस. तकनीक विकसित हुई। उसके बाद फेको सर्जरी आई। इसमें 3.2 के चीरे से सर्जरी होती थी। उसने भी तरक्की की। फिर 2.8 का चीरा आया। अब और भी उन्नत तकनीक आ चुकी है। इस समय हम अपने पारिजात अस्पताल में 1.8 और 1.4 की सबसे एडवांस सर्जरी कर रहे हैं।

इंटरनेशनल मानकों का पालन करता है अस्पताल

डॉ. भ्रमरेश के पारिजात अस्पताल को आईएसओ 9001:2008 सर्टिफिकेट मिला हुआ है। अस्पताल इंटरनेशनल मानकों को पूरा करता है। अस्पताल की parijateyehospital.com नाम से वेबसाइट भी है। इस पर जाकर अस्पताल के बारे में सारी जानकारी पाई जा सकती है। साथ ही ऑनलाइन अपॉइंटमेंट भी प्राप्त कर सकते हैं। 20 बेड के इस अस्पताल में आंखों से जुड़े सभी तरह के ऑपरेशन होते हैं।

अध्यापक बनना चाहते थे डॉ. भ्रमरेश

डॉ. भ्रमरेश अपने पिता को अपना सबसे बड़ा हीरो मानते हैं। इसीलिए वे पिता की तरह एक अध्यापक बनना चाहते थे। बीएससी में प्रवेश का मकसद भी यही था। मगर उस समय प्रतियोगिता के चलते उन्होंने यूं ही मेडिकल प्रवेश परीक्षा का फॉर्म भर दिया। प्रवेश परीक्षा में वे पास हो गए। उसके बाद उन्होंने एसएन कॉलेज में प्रवेश ले लिया। उनके दोनों भाई शिक्षक है। एक भाई डॉ. योगेश चन्द्र शर्मा आईआईटी (बीएचयू) में पढ़ाते हैं, तो दूसरे भाई डॉ. गोपेश चन्द्र शर्मा इन्वर्टिस में एप्लाइड केमिस्ट्री के शिक्षक हैं।

नेतृत्व क्षमता के धनी

डॉ. भ्रमरेश नेतृत्व करने में हमेशा आगे रहे हैं। कॉलेज में पढ़ाई के दौरान उन्होंने तीन जे.डी.ए. आन्दोलन का नेतृत्व किया था। वह इन आन्दोलन के संयोजक थे। छात्र जीवन में उन्हें एक सफल कलाकार के रूप में भी जाना जाता था। दरअसल उन्हें शुरू से ही थियेटर का शौक था।

वे बढ़-चढ़ कर ड्रामा और नुक्कड़ नाटक में भाग लेते थे। डॉ. भ्रमरेश का मन रचनात्मक लेखन में भी खूब रमता है। उनकी लिखी कविताएं रोगियों का मनोबल बढ़ाने का काम करती हैं। वैसे उनकी पत्नी भी कवयित्री हैं। अस्पताल में पति-पत्नी का यह भाव ही सेवा के रूप में साफ नजर आता है।

डॉ. भ्रमरेश शर्मा पत्नी रीना शर्मा, पुत्र पारिजात एवं लक्ष्य शर्मा के साथ

प्रेमनगर निकट सूद धर्मकाटा स्थित पारिजात चैरिटेबल आई हॉस्पिटल

डॉ. भ्रमरेश शर्मा पत्नी रीना शर्मा के साथ

हिन्दुस्तान मैगजीन